पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

History of Western Philosophy

TDC Part-II

डॉ. विजय कुमार

दर्शनशास्त्र विभाग

लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

बेनेडिक्टस स्पिनोजा

(Benedictus Spinoza)

गुण की अवधारणा

(Concept of Attributes)

स्पिनोजा का द्रव्य असीम है इसलिए उसके गुण भी असीम तथा अनन्त हैं। गुण को परिभाषित करते हुए स्पिनोजा ने कहा है कि गुण वह है जिसे बुद्धि द्रव्य का सार गुण समझती है। स्पिनोजा का द्रन्य निर्गुण, निर्विशेष और अनिर्वचनीय है तथा जिसकी भावना के लिए अन्य भावना की आवश्यकता नहीं होती है। वह निर्गुण द्रव्य ईश्वर है। परन्तु ईश्वर जब निर्गुण और अपरिणामी है तो फिर सृष्टि केसे होती है। इसके समाधान के लिए स्पिनोजा ने गुण की कल्पना की। गुण द्रव्य का धर्म है। द्रव्य सर्वगुण सम्पन्न है। परन्तु मानव बुद्धि उनमें से केवल दो ही गुणों को जान सकता है- चैतन्य और विस्तार। यद्यपि ये दोनों गुण एक-दूसरे के विपरीत प्रतीत होते हैं। क्योंकि एक चेतन है दूसरा जड़। परन्तु स्पिनोजा के कथनानुसार इसे एक-दूसरे का विरोधी नहीं कहा जा

सकता क्योंकि ये दोनों एक ही ईश्वर के दो गुण हैं। जिस प्रकार आम में अनेक हुण पाए जाते हैं, जैसे – रंग, आकार, गंध, स्पर्श आदि। परन्तु ये सभी गुण आम में बिना विरोधाभाव के देखे जाते हैं। उसी प्रकार द्रव्य में अनेक गुण सहभाव से रहते हैं लेकिन मानव अपनी सीमित बुद्धि के कारण इन्हें विरोधी मानता है।

ईश्वर विशेष्य है और चैतन्य तथा विस्तार उसके विशेषण। अतः विशेष्य से विशेषण की सत्ता अलग हो ही नहीं सकती। हा! ये चैतन्य और विस्तार परस्पर भिन्न अवश्य हैं, परन्तु पृथक् नहीं हैं और न ही इनके विरोधी और पृथक होने का प्रश्न उठता है, क्योंकि ये एक ही ईश्वर के दो गुण हैं। बल्कि ये कहा जा सकता है कि चैतन्य और विस्तार ईश्वर की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों में से दो रूप है। स्पिनोजा ने कहा है कि विचार और विस्तार एक ही सत्य के दो अलग-अलग नाम हैं, दो अलग-अलग माध्यम हैं जिनके द्वारा ईश्वर अपने अस्तित्व का प्रकाशन करता है। दोनों का उद्गम एक ही ईश्वर से होता है और दोनों समानान्तर रूप से इस जगत् में प्रवाहित हो रहे हैं।

स्पिनोजा का यह कहना कि ईश्वर अनन्त गुण सम्पन्न है पर हमारी मानवीय बुद्धि केवल दो ही गुणों को ग्रहण कर सकती है। ऐसा क्यों? यह प्रश्न उपस्थित होता है। यदि ईश्वर में असंख्य गुण है तो इसका आधार क्या है या फिर मानवीय बुद्धि को इसका ज्ञान होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि स्पिनोजा का यह कहना कि प्रत्येक गुण द्रव्य की असीमता का प्रदर्शन करता है तथा दूसरी ओं यह कहना कि कोई भी गुण किसी वस्तु को सीमित कर देता है। आत्मविरोधी जान पड़ता है। परन्तु यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक है कि स्पिनोजा का यह कहना कि प्रत्येक विशेषण निषेधात्मक है, इसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर निर्विशेष या निर्गुण है, इसका अर्थ यह है कि ईश्वर असीम या अपरिछिन्न है अर्तात् ईश्वर को परिछिन्न या सीमित नहीं कर सकते हैं। स्पिनोजा का कथन मात्र इतना है कि ईश्वर का सत्यत्व केवल ईश्वर पर निर्भर है उनसे पृथक नहीं।